महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का बीएचयू एलूमनी वेल्फेयर परिषद के व्याख्यान माला कार्यक्रम में उद्बोधन

स्थान :- समन्वय भवन दिनांक :- 15 फरवरी, 2013 समय:- शाम 6 बजे

मुझे बीएचयू एलूमनी वेल्फेयर परिषद भोपाल द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित मालवीय स्मृति व्याख्यान माला एवं सांस्कृतिक संध्या में सम्मिलित होते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

मैं सबसे पहले आपको बताना चाहूंगा कि मैं अत्यंत भाग्यशाली हूं कि मुझे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विद्या अध्ययन का सुअवसर प्राप्त हुआ है। हम सभी के लिए यह गर्व की बात है इस विश्वविद्यालय के छात्र न केवल देश में अपितु पूरे विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर रहे हैं और उन्होंने भरपूर यश अर्जित किया है।

यह आयोजन एक ऐसा अवसर है जब हम सभी को राष्ट्रीय माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. अच्यूतानन्द मिश्र और महामना मालवीय मिशन नई दिल्ली के संस्थापक एवं संरक्षक डा. पन्नालाल जायसवाल के विचार इस व्याख्यान माला के माध्यम से सुनने का अवसर मिला है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय इस युग के आदर्श पुरूष थे। अपने जीवन-काल में पत्रकारिता, वकालत, समाज-सुधार, मातृ-भाषा तथा भारतमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिए तैयार करने की थी जो देश सेवा के लिए तैयार करने की थी, जो देश का मस्तक गौरव से ऊंचा कर सकें।

यह द्रष्टव्य है कि महामना मालवीय सत्य, ब्राह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्म-त्याग में इस देश में अद्वितीय स्थान रखते थे। समस्त आचरण पर महामना सदैव उपदेश ही नहीं देते थे, परन्तु उसका सर्वथा पालन भी किया करते थे। अपने व्यवहार में महामना सदैव मृदुभाषी रहे। कर्म ही उनका जीवन था।

हृदय की महानता के कारण संपूर्ण भारत में महामना के नाम से संपूजित मालवीय जी को संसार में सत्य,दया और न्याय पर आधारित समाज सर्वाधिक प्यारा था। करूणामय हृदय, मनुष्यमात्र में अद्वेष, शरीर मन और वाणी के संयम, धर्म और देश के लिये सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में आत्मविश्वासपूर्वक, असंभव कर्मों का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीय जी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे।

पं. मालवीय के नाम को 'महामना' जैसे विश्लेषण के साथ जोड़ने वाले बापू ने अपनी आत्मकथा में मालवीय जी को "भारतभूषण" कहा है।

गांधी जी महामना मालवीय पर बहुत विश्वास करते थे और समय-समय पर उनसे विचार-विमर्श भी किया करते थे। मालवीय जी ने बहुत आंदोलनों में गांधी जी के साथ भाग लिया। चार बार कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। 1932-33 में गिरफ्तार हो जाने के कारण वो अध्यक्षता नहीं कर सके लेकिन अध्यक्ष के पद पर साथ भाग लिया। उन्होंने देश के लोगों को कांग्रेस के माध्यम से जो भाषण दिये उससे लोगों में जागृति फैली थी।

महामना मालवीय जी दलित उत्थान के लिए बहुत प्रयासरत रहे। उनका कहना था कि दलित बच्चों को भी शिक्षा दी जाए। छूआ-छूत का भेदभाव मिटा कर उन्हें राष्ट्रीय धारा में जोड़ने का काम किया जाए।

महामना मालवीय जी का महिलाओं के उत्थान के बारे में भी विशेष योगदान रहा है। उन्होंने महिलाओं के उत्थान के साथ-साथ उन्हें रष्ट्रीय धारा में जोड़ने के लिए अपने आदर्शों को कार्य रूप में परिणित करने का काम किया। इसका प्रतिफल यह था कि 1928 में बनारस विश्वविद्यालय के केम्पस में अलग से महिला कालेज की स्थापना की गई। यहां पर महिलाओं की शिक्षा की विशेष व्यवस्था की गई थी।

जन-कल्याण के लिए छोटे-से-छोटे व्यक्ति के आगे भी हाथ फैलाने में उन्होंने हिचक नहीं दिखाई। उनकी इस क्षमता की प्रशंसा करते हुए बापू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि- “देश में जन कल्याण के काम के लिए भिक्षा मांगने की जबरदस्त शक्ति रखने वालों में पहला नाम मालवीय जी का था.... इस विषय में मालवीय जी के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाला मुझे कोई मिला ही नहीं।” गांधी जी ने यह भी कहा है कि मेरे चरित्र में कोई दाग हो सकता है लेकिन महामना मालवीय जी के चरित्र में कोई दाग नहीं हो सकता।

महामना का जन्म भारत के उत्तरप्रदेश के प्रयाग में 25 दिसम्बर सन 1891 को एक साधारण परिवार में हुआ था। इनके पिता ब्राजनाथ और माता भूनादेवी मालवा के मूल निवासी थे इसलिए मालवीय कहलाए। महामना मालवीय जी मूर्धन्य राष्ट्रीय नेताओं में अग्रणी थे। जितनी श्रद्धा और आदर उनके लिए शिक्षित वर्ग में था। उतना ही जन साधारण में भी था। मालवीय जी की विद्वता असाधरण थी और वे अत्यन्त सुसंस्कृत व्यक्ति थे। विनम्रता एवम शालीनता उनमें कूट-कूटकर भरी थी। वे अपने युग के सर्वश्रेष्ठ वक्ता थे।

वे संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों ही भाषाओं में निष्णात थे। महामना जी का जीवन विद्यार्थियों के लिए एक महान प्रेरणा स्त्रोत था। उनके स्तर के किसी अन्य नेता के पास जनसाधारण की पहुंच उतनी सरल नहीं थी, जितनी मालवीय जी के पास।

मालवीय जी ने सन् 1893 में कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की थी और कई वर्षो तक वकालत भी की थी। वकालत के क्षेत्र में मालवीय जी की सबसे बड़ी सफलता चौरी चौरा कांड के अभियुक्तों को फांसी से बचा लेने की थी। चौरी-चौरा कांड के 170 भारतीयों को फांसी की सजा सुनाई गई थी, किंतु मालवीय जी के बुद्धि-कौशल ने अपनी योग्यता और तर्क के बल पर 151 लोगों को फांसी से छुड़ा लिया। इस केस की ख्याति सारे देश में ही नहीं, अपितु सारे विश्व में फैल गई। महामना मालवीय सभी धर्मों की एकता के पक्षधर थे। वे कहते थे जब तक देश के रहने वाले सभी धर्मों में एकता नहीं होगी तब तक आजादी नहीं मिल सकती और इसके बाद विकास नहीं हो सकता।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय उनका अक्षय-कीर्ति-स्तंभ है जिसमें उनकी विशाल बुद्धि और संकल्प, देशप्रेम और क्रियाशक्ति तथा तप और त्याग मूर्तिमान हैं।

विश्वविद्यालय के उद्देश्यों हिन्दू समाज और संसार के हित के लिये भारत की प्राचनी सभ्यता और महत्ता की रक्षा औश्र संस्कृत विद्या के विकास और पाश्चात्य विज्ञान के साथ भारत की विविध विद्याओं और कलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। उनकी अमरकृति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पौरात्य एवं पाश्चात्य, प्राचीन एवं आधुनक समस्त विद्याओं की राजधानी ही नहीं, अपितु भारत की राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी प्रतीक रही है। इस विश्वविद्यालय के बाबत डा. एस.राधाकृष्ण ने कहा था कि पंडित मदनमोहन मालवीय ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना कर एक ऐसा दीपक जलाया है जिसका दूर अनंत तक फैला हुआ प्रकाश उस समय तक बना रहेगा जब तक ईश्वरीय कृपा से मानव सभ्यता अपने अस्तित्व में रहेगी।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारतीय स्वाधीनता संग्राम के युग में प्रेरणा एवं शक्ति के अजस्त्र स्त्रोत के रूप में भी अपनी भूमिका निभा चुका है। मालवीय जी ने 4 फरवरी 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। मालवीय जी सन् 1919 से 1939 तक इसके कुलपति रहे।

राष्ट्र की सेवा के साथ ही साथ नवयुवकों के चरित्र-निर्माण के लिए और भारतीय संस्कृति की जीवंतता को बनाए रखने के लिए मालवीयजी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की।

महामना मालवीय जी ने शिक्षा के प्रसार और इसे नया स्वरूप प्रदान करने पर इतना बल इस कारण दिया, क्योंकि वह इसे सांस्कृतिक जागरण का प्रधान अंश मानते थे। इसी दृष्टि से उन्होंने भारतीय भाषाओं को विकसित करने तथा संस्कृत के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया।

मालवीय जी का विश्वास था कि राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है, जब वहां के निवासी सुशिक्षित हों। बिना शिक्षा के मनुष्य पशुवत माना जाता है। वे जानते थे कि व्यक्ति अपने अधिकारों को तभी भलीभांति समय सकता है, जब वह शिक्षित हो। संसार के जो राष्ट्र आज उन्नति के शिखर पर हैं, वे शिक्षा के कारण ही हैं।

हमारे देश के लोगों को “अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वै-न दैन्य न पलायनम”प्रतिज्ञा का पालन करना है। हमें आत्मनिर्भर बनना है, शक्तिशाली बनना है, ताकि विश्व की होड़ में हम पूरी दृढ़ता के साथ खड़े रह सकें। यह काम किसी एक के बस का नहीं है। इसे सबको मिलकर करना होगा। मुझे विश्वास है कि मालवीय जी की जीवन यात्रा और कर्म यात्रा लोगों को तथा विशेषकर युवाओं को संघर्ष, कर्तव्य-निष्ठा, आत्मविवास, राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्रीय चरित्र त्याग और सेवा जैसे मूल्यों का स्मरण दिलाती रहेगी।

आप लोगों ने मुझे इस कार्यक्रम में शामिल किया, इसके लिए मैं आप सबका हृदय से आभारी हूं।

जय हिन्द।